موضوع الخطبة : مقتضيات الإيمان بالرسل 2/2

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن تيمى (@Ghiras_4T)

शीर्षक:

संदेशवाहकों पर ईमान के तक़ाज़े 2/2

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰـــه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

(يَا أَيُّهَ الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रशंसाओं के पश्चात!
सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

1.ए मुस्लमानों!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने **ह्रदय** में जीवित रखो,उसकी अज्ञाकारिता करो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जान लो कि बंदों के प्रति अल्लाह का कृपा ही है कि उसने **उनकी ओर संदेशवाहक भेजे** ताकि उनकी धार्मिक एवं संसारिक मामलों में जो चीजें उनके लिए लाभदायक हैं,उनका ज्ञान उन तक पहुंचाऐं,उन्हें संसार की अच्छाई एवं आखिरत की मोक्ष का मार्ग दिखाऐं,क्योंकि मनुष्यों के पास चाहे जितना भी ज्ञान एवं बुद्धिमत्ता हो उनकी बुद्धि ऐसी संयुक्त एवं सामान्य शरीअ़त तक पहुंच प्राप्त नहीं कर सकतीं जिससे उम्मत के समस्त मामले ठीक रूप से संपन हो सकें,क्योंकि मनुष्य की बुद्धि अधूरी हैं,किंतु अल्लाह तआ़ला निती रखने वाला एवं अवज्ञत है और वह अपने जीवों की आवश्यकता से अति अवज्ञत है,अल्लाह का कथन हैः

﴿ألا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير﴾

अर्थातःक्या वही न जाने जिसने पैदा किया?फिर वह बरीकबीं और अवज्ञत भी हो।

अतः**संदेशवाहक अल्लाह और जीव के मध्य अल्लाह के धर्म को पहुंचाने के लिए दूत और माध्यम हैं**,अल्लाह तआ़ला का कथन हैः

(يا أيها الرسول **بلغ ما أنزل إليك** من رب)

अर्थातःए संदेशवाक जो कुछ भी आप की ओर आपके रब की ओर से नाज़िल किया गया है,पहुंचादें।

संदेशवाहकों का स्थान इस प्रकार उच्च था इस लिए उनपर ईमान लाना समस्त शरीअ़तों में धर्म का महत्वपुर्ण स्तंभ रहा,इस्लामी शरीअ़त में भी उनका यही स्थान है,जो यह सुनिश्चित करती है कि **संदेशवाहकों पर ईमान लाना ईमान का एक स्तंभ है**,और इसके बिना बंदे का ईमान सही नहीं हो सकता,अल्लाह का कथन हैः

﴿آمن الرسول بما أنزِل إليه من ربه والمؤمنون كل آمن بالله وملائكته وكتبه **ورسله** لا نفرق بين أحد من رسله﴾

अर्थातःसंदेशवाहक ईमान लाया उस चीज पर जो उसकी ओर अल्लाह की ओर से उतरी और मोमिन भी ईमान लाए,यह सब अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूतों पर और उसकी पुस्तकों पर और उसके **संदेशवाहकों पर ईमान लाए,**उसके संदेशवाहकों में से किसी में हम भेद भाव नहीं करते।

2.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि **समस्त संदेशवाहकों में सर्वश्रेष्ठ इब्राहीम खलील और मोहम्मद अलैहिमस्सलाम हैं**,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों अलैहिमस्सलातो वस्सलाम के अतिरिक्त किसी को अपना खलील (मित्र) नहीं बनाया।

2.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि **दोनों खलीलों (मित्रों) में मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सर्वश्रेष्ठ हैं**,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने समस्त प्राचीन एवं आधुनिक जीवों एवं समस्त पैगंबरों आदि पर प्राथमिकता प्रदान की,अतःआप उन सब के इमाम और सरदार हैं,जैसा कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं फरमायाः"में क़यामत के दिन **समस्त मनु के संतानों का प्रधान रहूंगा**"।[1]

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआ़ला ने आपको बहुत सी **ऐसी चिन्हें एवं प्रतीकें प्रदान की थीं जो अन्य पैगंबरों के मोजेज़ों (चमत्कारों) से बढ़ कर थीं**,उन चिन्हों एवं प्रतीकों पर सबसे अधिक लोगों ने ईमान लाया,उनमें सबसे बड़ा चिन्ह और सर्वश्रेष्ठ चमत्कार कुरान है,यह भी ज्ञात है कि पैगंबरों के चमत्कार उनकी मृत्यु के साथ समाप्त होगए,किन्तु कुरान सवेद रहने वाला मोजेज़ा (चमत्कार) है।

समस्त पैगंबरों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की श्रेष्ठता एवं उच्चता का एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह तआ़ला ने आप के अंदर वे समस्त गुण **इकटठा** कर दिए जो विभिन्य पैगंबरों को प्रदान किए गए थे,अर्थात मित्रता,वार्तालाप,नबूवत एवं संदेशवाहन,जहां तक मित्रता की बात है-जो कि प्रेम का सर्वोच्च श्रेणी है-तो आप अल्लाह के खलील (मित्र) और अल्लाह आपका खलील (मित्र) है,आप इस गुण में इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साझी हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"तुम्हारे साथी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अल्लाह तआ़ला ने अपना खलील (मित्र) बनाया है"।[2]

इसी प्रकार वार्तालाप,अल्लाह तआ़ला ने मेराज की रात आपसे आकाश पर वार्तालाप किया और आप पर पांच समय की नमाज़ फरज़ की गई,आप इस गुण में मूसा अलैहिस्सलाम के साझी हैं।

रही बात नबूवत एवं संदेशवाहन से आपको चितित्र करने की तो इसका उल्लेख अनेक आयतों में आया है,उदाहरण स्वरूप अल्लाह का यह कथनः﴿يا أيها **الرسول** بلغ ما أنزل إليك من ربك﴾

अर्थात**:ए रसूल**!जो कुछ भी आपकी ओर आपके रब की ओर से नाज़िल किया गया है,पहुंचा दें।

﴿وأرسلناك للناس **رسولا**﴾.

अर्थातःहमने तुझे समस्त लोगों को **संदेश पहुंचाने वाला (रसूल)** बना कर भेजा है।

यह चार गुण एवं विशेषताएंःमित्रता,वार्तालाप,नबूवत एवं संदेशवाहन,कभी किसी नबी के अंदर **इकठ्ठा** नहीं हूईं,केवल हमारे नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के,यह इस बात का प्रमाण है कि आप समस्त पैगंबरों में सर्वश्रेष्ठ हैं।

---

[1] इसे मुस्लिमः2278 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[2] इसे मुस्लिमः2383 में इब्ने मसउूद रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

पैगंबरों के मध्य श्रेष्ठता एवं उच्चता के अध्याय में यह भी एक महत्वपूर्ण बिंदु है कि वे पैगंबर जिनका उल्लेख कुरान में आया है,वे उन पैगंबरों से श्रेष्ठतर हैं जिनकी सूचना कुरान में नहीं दी गई है,इसका कारण कुरान का उच्च स्थान एवं प्रतिष्ठा है,अतः अल्लाह ने कुरान में जिन पैगंबरों का उल्लेख किया है वे उनसे श्रेष्ठतर स्थान एवं प्रतिष्ठा रखते हैं जिनका उल्लेख कुरान में नहीं आया है।

3.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तकाजा यह भी है कि **बेगैर किसी भेद भाव के समस्त पैगंबरों पर ईमान लाया जाए**,इसका विपरीत यह है कि कुछ पैगंबरों पर ईमान लाया जाए और कुछ का खंडण किया जाए,चाहे वह एक नबी ही क्यों न हो,अल्लाह तआ़ला ने समस्त पैगंबरों पर ईमान लाने के अनिवार्यता के प्रति फरमायाः

﴿قولوا آمنا بالله وما أنزل إلينا وما أنزل إلى إبراهيم وإسماعيل وإسحاق ويعقوب والأسباط وما أوتي موسى وعيسى وما أوتي النبيون من ربهم **لا نفرق بين أحد منهم** ونحن له مسلمون﴾.

अर्थातःए मुसलमानो!तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज पर जा हमारी ओर उतारी गई और जो चीज इब्राहीम,इस्माईल,इस्ह़ाक़ और याकूब अलैहिमुस्सलाम और उनके संतान पर उतारी गई और जो कुछ अल्लाह की ओर से मूसा और ईसा अलैहिमस्सलाम और अन्य पैगंबर अलैहिमुस्सलाम को दिए गए।**हम उनमें से किसी के मध्य अंतर एवं भेद भाव नहीं करते**।हम अल्लाह के आज्ञाकारी हैं।

इब्ने जरीर रह़ीमहुल्लाहु अल्लाह के कथनः ﴿لا نُفَرِّق بَيْنَ أحد منهم﴾**(हम उनमें से किसी के मध्य अंतर एवं भेद भाव नहीं करते)** की व्याख्या करते हुए लिखते हैंःहम एसा नहीं करते कि कुछ पैगंबरों पर ईमान लाएं और कुछ का इन्कार करें,कुछ पैगंबरों से बराअत व्यक्त करें और कुछ से मित्रता निभाएं,जैसा कि यहूदियों ने ईसा और मोह़म्मद अलैहिमस्सलाम से बराअत व्यक्त की और अन्य पैगंबरों का इकरार किया,और जिस प्रकार नसरानियों ने मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बराअत(मुक्ति) प्रकट की और अन्य पैगंबरों पर ईमान लाया,**बल्कि हम उन समस्त के प्रति गवाही देते हैं कि वे अल्लाह के रसूल एवं नबी थे,जो सत्य और हिदायत के साथ भेजे गए थे**।समाप्त

4.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि उन संदेशवाहकों पर ईमान लाया जाए जिनके नाम कुरान और सत्य ह़दीसों में आए हुए हैं,कुरान में छब्बीस(26) पैगंबरों के नाम आए हैंःआदम,नूह,इब्राहीम,इस्ह़ाक,याकूब,इस्माईल,दाउ़द,सोलेमान,

अय्यूब,इल्यास,यूनुस,यसअ़,लूत़,इदरीस,हूद,शोऐब,सालेह़,जूलकिफल,यूसुफ,मूसा,हारून,खिजर,ज़कर या,ईसा और मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

ह़दीस में भी एक नबी का नाम आया है जिनका उल्लेख कुरान में नहीं आया है,वह हैं यूशा बिन नून बिन अफरीहीम बिन यूसुफ बिन याकूब बिन इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम खलील

अलैहिमुस्सलाम,यह बनी इस्राईल के पैगंबरों में से थे,मूसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के पश्चात उन्हों ने ही बनी इस्राईल का नतृत्व किया।

सारांश यह कि कुरान एवं ह़दीस में जिन पैगंबरों एवं संदेशवाहकों का उल्लेख आया है उनकी संख्या सत्तइस(27) है।

रही बात उन पैगंबरों की जिनके नाम से अवज्ञत नहीं हैं,तो हम उनपर संपूर्ण रूप से ईमान लाते हैं,कुरान ने अल्लाह के इस कथन में उनकी ओर संकेत दिया है:

﴿وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلاً من قَبْلِكَ مِنْهُم من قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم من **لم نَقْصُصْ عَلَيْك**﴾.

अर्थातःनिसंदेह हम आपसे पूर्व भी अनेक संदंशवाहक भेज चुके हैं जिनमें से कुछ के (वाकेए) हम आपको ब्यान कर चूके हैं और **उनमें से कुछ के (किस्स) तो हमने आप को ब्यान ही नही किए।**

5.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि अल्लाह के संदेशवाहकों की संख्या 315 है,उनमें वे संदेशवाहक भी शामिल हैं जिनके नाम स्पष्ट रूप से कुरान एवं ह़दीस में आए हैं,जैसा कि गुजर चूका है,बाकी अन्य संदेशवाहकों के नाम से हम अवज्ञत नहीं,उनकी संख्या का परिसीमन अबू अमामा रजीअल्लाहु अंहु की इस रिवायत से होता है कि एक व्यक्ति ने सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछाःए अल्लाह के रसूल क्या मनु नबी थे?

आपने फरमायाःहां, (अल्लाह ने) आपको ज्ञान दिया और आपसे वार्तालाप किया।

पूछाःउनके और नूह़ के मध्य कितना कालावधि था?

आपने फरमायाःबीस शताब्दी।

पूछ गयाःक्या नूह़ और इब्राहीम के मध्य कितना कालावधि था?

आपने फरमायाःबीस शताब्दी।

सह़ाबा ने पूछाःए अल्लाह के रसूल!रसूल कितने थे?

आपने फरमायाः315 का बड़ा समूह।[3]

6.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का तक़ाजा यह भी है कि **उनके प्रति जो भी सत्य सूचना प्राप्त हूई है,उसकी पुष्टि कि जाए**,उनके किस्सों एवं विशेषताओं पर आधारित सूचनाएं पवित्र कुरान,सुन्नह एवं सीरत व इतिहास की पुस्तकों में आई हूई हैं,रही वे सूचनाएं जो संदेशवाहकों के प्रति अहले किताब(यहूद व इसाई) की पुस्तकों में आई हुई हैं और जिनकी पुष्टि मुसलमानों की पुस्तकों की सत्य रिवायतों से नहीं होती,तो एसी सूचनाओं की पुष्टि एवं खण्डन करना मुसलमान पर अनिवार्य नहीं,हां यदि वे मुसलमानों की सत्य पुस्तकों के विरुध हों तो उस समय उनका खण्डन करना अनीवार्य है,इसका प्रमाण आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह

---

[3] इसे ह़ाकिम ने"मुसतदरक"(2/262)में रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द इसे के हैं,ज़हबी ने कहाःयह ह़दीस मुस्लिम की शर्त पर है,तथा इसे तबरानी ने"अलकबीर"(9/118-119) में रिवायत किया है और इसमें "313"का शब्द आया है,इस ह़दीस को अल्बानी ने "अलसिलसिला अलसह़ीहा" (2668) में सह़ी कहा है।

ह़दीस हैः"तुम अहले किताब(यहूद व नसारा)की पुष्टि अथवा खण्डन न करो बल्कि यूं कहोःहम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज पर जो हमारी ओर तुम्हारी ओर उतारी गई"।[4]
उनकी ओर जो पुस्तकें उतारी गईं वे मूल तौरैत व इंजील हैं जिन्हें अल्लाह ने मूसा एवं ईसा पर उतारे गए,न कि वे जो हैरफैर किए हूए यहूद व इसाई के हाथों में हैं।
7.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि **इस बात पर ईमान लाया जाए कि वह जिस संदश के साथ भेजे गए,उसको उन्हों ने अल्लाह के आदेश के अनूसार(अपने समुदाय तक) पहुंचा दिया**,उन्होंने इस संदेश को इस प्रकार स्पष्ट रूप से ब्यान कर दिया कि जिनकी ओर वह भेजे गए थे उनमें से कोई भी उससे अज्ञात न रहा,अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

﴿فهل على الرسل إلا البلاغ **المبين**﴾

अर्थातःसंदेशवाहकों पर केवल **खुल्लम खुल्ला** संदेश पहुंचा देना है।
इस प्रकार अल्लाह के संदेशवाहक **लोगों पर अल्लाह का प्रमाण हूए**,अल्लाह का कथन हैः

﴿رسلا مبشرين ومنذرين **لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل** وكان الله عزيزا حكيما﴾.

अर्थातःहमने उन्हें संदेशवाहक बनाया है,शुभसंदेश सूनाने वाले और अवज्ञत करने वाले **ताकि लोगों को कोई तर्क एवं आरोप संदेशवाहकों को भेजने के पश्चात अल्लाह तआ़ला पर रह न जाए**,अल्लाह तआला बड़ा प्रभावी और बड़ा निती वाला है।
8.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि **उन मोजेज़त(चमत्कारों) एवं चिन्हों पर भी ईमान लाया जाए जिनके माध्यम से अल्लाह ने उनकी पुष्टि की**,उन मोजेज़ात(चमत्कारों) को प्रमाण एवं साक्ष्य से भी जाना जाता है,इनसे तात्पर्य वे अनहोनी घटनाएं हैं जो अल्लाह तआ़ला पैगंबरों एवं संदेशवाहकों के संदेशवाहन के प्रमाण एवं साक्ष्य के रूप में उनके हाथों अस्तित्व में लाता है,ताकि उनका मामला लोगों के लिए उलझन का कारण न रहे,क्योंकि लोग जब देखते हैं कि संदेशवाहकों का समर्थन एसे चीजों से किया जाता है जो मानव शक्ति से उपर की बात है,तो उनको विश्वास होजाता है कि वे अल्लाह की ओर से भेजो गए संदेंशवाहक हैं,अतःउनकी बातों पर उन्हें विश्वास हो जाता है,वे उनपर ईमान ले आते और धर्म पर उनका दिल स्थिर रहता।

- अल्लाह तआ़ला हमें और आप सबको क़ुरान की बरकतें प्रदान करे,मुझे और आप को इसकी आयतों और ह़िकमत(निती) पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

[4] इसे बोखारीः7362 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

أما بعد:

9.आप यह जान लें.अल्लाह आप पर कृपा करे.कि संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तकाजा यह है कि **उनकी आज्ञाकारिता की जाए**,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने संदेशवाहकों को शरीअ़तों के साथ भेजा,प्रत्येक संदेशवहक के साथ एक शरीअ़त नाजिल फरमाई ताकि लोग उनकी आज्ञाकारी करें,प्रत्येक शरीअतें ऐसी शिक्षाओं पर निर्मित थी जो लोगों के आस्था,प्रार्थना एवं चरित्र के सूधार का ज़ामिन थीं,अल्लाह ने अंतिम संदेशवाहक मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस्लाम धर्म के साथ भेजा,जोकि समस्त शरीअतों से सर्वश्रेष्ठ एवं संपूर्ण है,लोगों को आपकी आज्ञाकारिता का आदेश दिया और आपकी आज्ञाकारिता को अपनी आज्ञाकारिता बतलाई,अल्लाह ने फरमायाः

(من يُطع الرسول فقد أطاع الله)

अर्थातःउस संदेशवाहक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जो आज्ञाकारिता करे उसी ने अल्लाह की आज्ञाकारिता की।
और फरमायाः

(وإن تطيعوه تهتدوا).

अर्थातःहिदायत तो तुम्हें उसी समय प्राप्त होगी जब संदेशवाहक की आज्ञाकारिता करो।
10.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि **संदेशवाहक स्वेद प्रभावी रहते हैं**,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

﴿كتب الله **لأغلبن أنا ورسلي** إن الله قوي عزيز﴾

अर्थातःअल्लाह तआ़ला लिख चूका है कि निसंदेह **में और मेरे संदेशवाहक प्रभावी रहेंगे**।
तथा यह भी फरमायाः

(إنا **لننصر رسلنا** والذين آمنوا في الحياة الدنيا ويوم يقوم الأشهاد﴾

अर्थातःनिसंदेह **हम अपने संदेशवहकों** की और ईमान वालों की सहायता संसारिक जीवन में भी करेंगे और उस दिन भी जब गवाही देने वाले खड़े होंगे।
शंक़ीती़ रही़महुल्लाहु इस आयत की व्याख्या में लिखते हैंःयह आयत इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह के संदेशवाहकों को स्वेद आपने शत्रुओं पर प्रभाव प्राप्त रहता है,प्रभुत्व दो प्रकार के हैं:**प्रमाण एवं साक्ष्य का प्रभुत्व** जो कि समस्त संदेशवाहकों के लिए सिद्ध है,**हथियार एवं अस्त्र-**

शस्त्र का प्रभुत्व जो कि विशेष रूप से उन संदेशवाहकों के लिए सिद्ध है जिनको युद्ध का आदेश दिया गया।[5] समाप्त

(इस विश्य में)इब्ने तैमिया रहीमहुल्लाह का जो कथन है,उसका सार यह है किःसंदेशवाहकों को अपने विरोधियों पर तर्क एवं ज्ञान के आधार पर जो प्रभुत्व प्राप्त हुआ वह उस मोजाहिद(धार्मिक योद्धा) के श्रेणी से है जो अपने शत्रु को प्राजित करता है,और पैगंबरों को अपने विराधियों पर हथियार एवं अस्त्र-शस्त्र का जो प्रभुत्व प्राप्त हुआ वह उस मोजाहिद(धार्मिक योद्धा)के श्रेणी से है जिसने अपने शत्रु की हत्या करदी।[6]

आपने यह भी फरमायाःकोई नबी एसा नहीं जिनकी जिहाद के मध्य में हत्या करदी गई हो।[7]

- ए मोमिनो!संदेशवाहकों पर ईमान लाने के यह बीस तक़ाजे हैं जिनका जानना और विश्वास रखना मोमिन पर अनीवार्य है ताकि वे उन तकाजों से संपूर्ण रूप से अवज्ञत रहे और उनके पैर ईमान के मार्ग पर स्थिर रहें।
- आप यह जानलें-अल्लाह आप पर कृपा कर-कि अल्लाह तआला ने आपको यह आदेश दिया है,अल्लाह का फरमान हैः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआला और उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोहम्माद पर रहमत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़यामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

- हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।
- हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।
- हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के प्रति कृपा का कारण बना दे।

---

[5] देखें:अज़वाउलब्यान

[6] देखें:"अलनबूव्वात":209

[7]अलफतावाः1/59

- हे अल्लाह!हम तुझसे दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की दूआ मांगते हैं,जो हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं,और हम तेरी शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त पापों से जा हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं।
- हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग के स्वाली हैं और उस कथन एवं कार्य के भी जो स्वर्ग से निकट करदे,अैर तेरी शरण चाहते हैं नरक से और उस कथन एवं कार्य से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह! हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृत्युों पर कृपा कर और आज़माइशों से जूझ रहे हमारे भाइयों से आज़माइश को दूर करद।
- हे अल्लाह!हमारे धर्म को सूधार दे जो हमारे मामलों का रक्षक है,हमारी दुनिया को सूधार दे जहां हमारा जीवन गुज़रता है,हमारे आखिरत को दुरुस्त करदे,जो हमारा अंतिम ठेकाना है,प्रत्येक पुण्य के कार्य में हमारे लिए जीवन को बढ़ादे,और मोत को हमारे लिए शांति का वस्तू बना।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।
- ए अल्लाह के बंदो!निसंदेह अल्लाह तआ़ला न्याय का,कलयाण का एवं परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार का आदेश देता है और **अश्लीलता** के कार्यों,अशिष्ट गतिविधियों और क्रूरता व निर्दयता से रोकता है वह स्वयं तुम्हें प्रामर्श कर रहा है कि प्रामर्श प्राप्त करो।इस लिए तुम अल्लाह शक्तिशाली का जिक्र करो वह तुम्हारा जिक्र करेगा,उसके आशीर्वादों पर उसका आभारी रहो वह तुम्हें और अधिक आशीर्वाद प्रदान करेगा,अल्लाह का जिक्र बहुत बड़ी चीज है,तुम जो कुछ भी करते हो वह उससे अवज्ञत है।

लेखक:
मजिद बिन सुलेमान अलरसी
८ जुलक़ादा १४४१ हि़जरी
जूबैल, सउूदी अ़रब
००९६६५०५९०६७६१

अनुवादः
फैजुर रह़मान हि़फजुर रह़मान तैमी
binhifzurrahman@gmail.com